दैनिक भास्कर

शुक्रवार 18 दिसंबर 2015

... धरती का कर्ज चुकाना अभी बाकी

हिंदी विवि में आगमन पर की गयी चर्चा

डॉ. सुनीता जैन से साक्षात्कार

ब्यूरो|वर्धा. सुनीता जैन एक ऐसी अजीम शख्सियत है जो हिंदी एवं अंग्रेजी में समान अधिकारी रखती हैं। उनकी ख्याति एक बेजोड़ कवयित्री, उपन्यासकार एवं कहानीकार के रूप में देश और दुनिया में फैली है। वह पिछले चार दशकों से लिख रही है। उनके रचना संसार में , 60 पुस्तकों का समावेश है जिसमें उपन्यास, लघु कहानियां, कविता एवं समीक्षा ग्रंथों का उल्लेख किया जा सकता है। उन्होंने उम्र के 14 वें वर्ष से लिखना शुरू किया। वह भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) दिल्ली से प्रोफेसर पद से निवृत्त होने के बाद भी लगातार लिख रही है। पद्मश्री के साथ-साथ साहित्य से जुड़े अनेक पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त प्रो. सुनीता जैन हाल ही में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में आयी थी। इस अवसर पर चर्चा की गयी। जब मैंने लिखना शुरू किया तब मुझे यह कतई पता नहीं था कि वह कहानी है या उपन्यास। आयु के 14वें वर्ष से मैंने लिखना शुरू किया। इसके चार साल बाद ही

यानी 18वें वर्ष में मेरी शादी हुई। शादी के बाद घर-गृहस्थी की जिम्मेदारी आ गयी। परंतु मेरे मन में लिखने का जो जुनुन था वह मुझे बेचैन कर देता था। तब तो मेरे सामने कोई रोल मॉडल नहीं था जिसे पढ़कर या सुनकर मैं लिख रही थी। हां एक बात है जब मैं लिख रही थी उस जमाने को 'फर्स्ट ड्राॅप ऑफ रायटर' कहा जा सकता है। इस पीढ़ी में कृष्णा सोबती, मन्नु भंडारी आदि का उल्लेख किया जा सकता है, बाद में मृदुला गर्ग की पीढ़ी का नाम लिया जा सकता है। आज लिखने वालों के सामने अनेक माध्यम उपलब्ध हैं। हमारे समय में न तो टेलीफोन था, न इंटरनेट था और न ही आज जैसी संचार व्यवस्था थी। मैं 15 वर्ष तक तो विदेश में थी और वहां हिंदी की किताबें भी नहीं मिल पाती थी। ऐसी स्थिति में भी मैंने लिखना नहीं छोड़ा और वहां भी लगातार 15 वर्षों तक लिखती रही। बचपन से ही प्रकृति के साथ लगाव रहा और इससे ही प्रेरणा मिलती गयी। पिघलती बर्फ से उगते हुए फूलों को देखकर सीखा कि फूल भी अपने अस्तित्व को बचाए रखने के लिए कितने संघर्ष के बाद खिल उठते हैं और आभा को नयी छटा देते हैं! तो मैं भी इससे सबक लेकर क्यों नहीं अपने आप को प्रस्तुत कर सकती? मैंने जीवन में 'कर्मण्य वाधिकारस्ते 'मा फलेषु कदाचन अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानमं सृजाम्यहम' इस मंत्र को अपनाया और मार्गक्रमण किया। इसके पहले मैं कागजों पर लिखा करती थी उनमें से कुछ तो फाड़कर फेंक भी दिए गये। परंतु लिखने का असली सिलसिला सेवानिवृत्ति के बाद ही शुरू हुआ। हरियाणा के अंबाला जैसे नगर में जन्मी सुनीता जैन ने अमेरिका में अंग्रेजी में एम. ए. और पीएच.डी. की और बाद में आईआईटी दिल्ली से मानविकी और समाज विज्ञान विभाग की अध्यक्ष के रूप में सेवा निवृत्त हुई। आज वह कवियों में सीनियर हैं। आपके 52 कविता संग्रह हैं जिसका प्रमुख भारतीय भाषाओं सहित अंग्रेजी, जर्मनी, रशियन और अन्य विदेशी भाषाओं में अनुवाद हुआ है। उनके साहित्य पर सन 2010 में 'सुनीता जैन समग्र' 14 खण्डों में प्रकाशित हुआ है। उनके अंग्रेजी पुस्तकों में शुमार हैं अमेरिकन देसी एंड अदर पोएम्स, अ गर्ल ऑफ हर एज, कलेक्टेड पोएम्स जिसमें 1978 से 1985 के दौरान लिखी कविताएं शामिल हैं। अन्य अंग्रेजी पुस्तकों में फ्लाइ द फ्रेंडली स्काईज, कंसर्ट ऑफ वॉइसेस : एन एंटोलॉजी ऑफ वर्ल्ड वॉइसेस इन इंग्लिश और द मंगो ट्री। फ्लाइ द फ्रेंडली स्काइज पुस्तक जर्मनी, आस्ट्रिया, फ्रांस और स्विजरलैंड में अंगरेजी की कहानी पुस्तक के रूप में पाठ्यक्रम में शामिल की गयी है। 'शब्द काया' पुस्तक में उन्होंने अपने जीवन के उतार-चढ़ाव और संघर्ष को शब्दबद्ध किया है। एक महिला होने के नाते पहचान बनाने व चुनौतियों का सामना करने के विषय में वे कहती हैं कि एक महिला होते हुए मैंने अपनी पहचान बनायी। शुरू में घर और परिवार में विरोध हुआ। वह विरोध शादी के बाद भी चला परंतु मैंने अपने व्रत हो छोड़ा नहीं। वह कहती हैं कि यदि मैं हाउस वाइफ होती तो एक उत्कृष्ट उपन्यासकार होती। नौकरी की वजह से वह ने बन सकी परंतु आज इस बात का कोई मलाल मुझे नहीं है क्योंकि मैं जिस पीढ़ी से आती हूं। उस पीढ़ी के संघर्ष की मैं साक्षी हूं, जब लिखी हुई कविताएं फाड़ दी जाती थी और इसका सामना कमला दास जैसी लेखिकाओं भी करना पड़ा था।